

---

# Vishvakarmana Kritam Surya Stotram 23

---

## विश्वकर्मणा कृतं सूर्यस्तोत्रम् २३

---

### Document Information

---

Text title : Vishvakarmana Kritam Surya Stotram 23

File name : vishvakarmaNAKRRitaMsUryastotram23.itx

Category : navagraha, skandapurANa, stotra

Location : doc\_z\_misc\_navagraha

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : skandapurANa | prabhAsakhaNDa | adhyAya 11/171-180||

Latest update : August 24, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 24, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

विश्वकर्मणा कृतं सूर्यस्तोत्रम् २३



ईश्वर उवाच ।

लिखमानस्ततो भानुं विश्वकर्मा प्रजापतिः ।

उद्भूतपुलकः स्तोत्रमिदञ्चक्रे विवस्वतः ॥ १.११.१७ ॥

विवस्वते प्रणतजनानुकम्पिने महात्मने समजवसप्तसप्तये ।

सतेजसे कमलकुलालिबन्धवे सदा तमःपटलपटावपाटिने ॥ १७१ ॥

पावनातिशयसर्वचक्षुषे नैककामविषयप्रदायिने ।

भासुरामलमयूरवमालिने सर्वभूतहितकारिणे नमः ॥ १७२ ॥

अजाय लोकत्रयभावनाय भूतात्मने गोपतये वृषाय ।

नमो महाकारुणिकोत्तमाय सूर्याय वस्तुप्रभवालायाय ॥ १७३ ॥

विवस्वते ज्ञानभृतेऽन्तरात्मने जगत्प्रतिष्ठाय जगद्धितैषिणे ।

स्वयम्भुवे निर्मललोकचक्षुषे सुरोत्तमायामिततेजसे नमः ॥ १७४ ॥

क्षणमुदयाचलभालितार्चिः सुरगणगीतिगरिष्ठगीतः ।

त्वमुत मयूरवसहस्रवज्जगति विकासितपद्मनाभः ॥ १७५ ॥

तव तिमिरासवपानमदाद्भवति विलोहितविग्रहता ।

मिहिरविभासतया सुतरां त्रिभुवनभावनमात्रपरः ॥ १७६ ॥

रथमारुह्य समावयवं रुचिरविकलितदिव्यहयम् ।

सततमरिबले भगवंश्चरसि जगद्धितबद्धरसः ॥ १७७ ॥

अमृतमयेन रसेन समं विबुधपितृनपि तर्प्यसे ।

अरिगणसूदन तेन तव प्रणतिमुपेत्य लिखामि वपुः ॥ १७८ ॥

शुभसमवर्णमयं रचितं तव पदपांसुपवित्रतमम् ।

नतजनवत्सल मां प्रणतं त्रिभुवनपावन पाहि रवे ॥ १७९ ॥

इति सकलजगत्प्रसूतिभूतं त्रिभुवनभावनधामहेतुमेकम् ।

रविमखिलजगत्प्रदीपभूतं त्रिदशवरं प्रणतोऽस्मि देवदेवम् ॥ १.११.१८० ॥  
इति श्रीस्कन्दपुराणे प्रभासखण्डे प्रभासक्षेत्रमाहात्म्ये एकादशाध्यायान्तर्गतं  
विश्वकर्मा कृतं सूर्यस्तोत्रं समाप्तम् ।

स्कन्दपुराण । प्रभासखण्ड । अध्याय ११/१७१-१८० ॥

skandapurANa . prabhAsakhaNDa . adhyAya 11/171-180..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Vishvakarmana Kritam Surya Stotram 23*

pdf was typeset on August 24, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

